nirmaan
empowering communities

महतारी

अपरेल सूँ जून-2024

आपणी सेखावाटी, आपणी बोली

जणा आंपा रिस्ता क्लै टेम कोनी निकालै जणा टेम आंपा नै रिस्ता सूं निकाल दै है

कायर बणर सो साल जीबा सूँ बडिया है, कै बहादूर बणर एक साल ई जीवो। – मैंडोना

कहाणी

1. एक आदमी को नांव पांवणो

एक पांवणा नांव को मिनख हो। बो एक सिरवाळ कै घरां चलग्यो। सिरवाळ बिनै पूच्यो कै थ्हारो कै नांव है। बो बोल्यो, म्हारो नांव पांवणो है। सिरवाळ की लुगाई को नांव तारां हो अर बिकी छोरी को नांव रामा हो। सिरवाळ थोड़ी पाछै खेत मै हळ बाहबा चलग्यो। सिरवाळ रामा को बाळपणा मैईं ब्याव कर दियो हो। पेल्या लुगाई पांवणा सूं बोल्ये बी कोनी ही, तारा सोची कै, यो तो आपणी छोरी को ई पावणो है। जिसूं तारां बिच्यार लगाई कै, पांवणो तो छोरी नै लेबा आयो है। तारां तो छोरी नै नया लत्ता-कपड़ा पहरार पांवणा कै लारै खिंदा दी अर सिरवाळ की रोटी लेर खेत में चलगी।

सिरवाळ तारां नै कह्यो, अतनी मोड़ी कय्यां आई है? तारां बोली, छोरी नै पांवणा कै लारै खिन्दार आई हूं। सिरवाळ कह्यो, किस्या पांवणा कै लारै खिंदादी छोरी नै? तारां बोली आपणै घरां आयो हो नै, जखा कै लारै। सिरवाळ बोल्यो, बो तो बेरोना कुण हो? बिको तो नांव पांवणो हो।

सिरवाळ खेत म ई हळ नै छोड दियो अर खेत की मेर पै बंद्योड़ा घोड़ा पै बैठर पांवणा कै पिछै गयो पण बो पकड़ मै कोनी आयो। फेर बो एक छोरा नै कह्यो, यो घोड़ो लेर जा, आगै म्हारी छोरी अर पांवणो मिलै, बानै पकड़ लिये। बो छोरो घोड़ा नै जोर सूं दोड़ार पांवणा नै पकड़ लियो। पांवणो बोल्यो, मन जाबा दै, म्हे घोड़ो कोनी लेर जाऊं। म्हारा पेल्यी ई निरा नोहरा खाया हा, म्हे पेल्यी ई लिया तो घोड़ा नै। “वो छोरो सोच्यो कै, है सकै इनै ई घोड़ा नै देबा क्ले ई पांवणा नै पकड़बा बेई कह्यो है।” छोरो बोल्यो, पांवणा घोड़ो तो तोनै लेर ई जाणो पड़ैगो। पांवणो कह्यो, थ्हे न मानै तो, ले जाऊंगो घोड़ा नै। पांवणो घोड़ा पै रामा नै बठाणर लेर चलग्यो।

थोड़ी बार पिछै छोरो अर सिरवाळ एक ठोर मिल्या तो सिरवाळ कह्यो, घोड़ो कोठै है। छोरो बोल्यो, घोड़ो तो पांवणा नै दियायो। सिरवाळ कह्यो, म्हे तो पांवणा नै रोकबा बेई कह्यो हो अर तू तो म्हारा घोड़ा नै बि दियायो। पांवणा कै तो चोखो काम होगो।

सीख :- कदै बी पराया मिनख पै बिस्वास कोनी करणो चायै।

2. अब आगी म्हारै समज मै

एक बार की बात है। एक बार एक बीरबळ नांव को मिनख हो। बो एक दन गोकल नांव का दरजी कनै कुड़तो सिवांबै चलगो। गोकल बी कपड़ा नै देखर कह्यो कै, यो कपड़ो तो ओछो है। ईंको कुड़तो कोनी बणै। बो मिनख, बदरी नांव का दरजी कनै चलगो। बदरी बी कपड़ा नै देखर कह्यो कै, थ्हारो कुड़तो बण जावेलो।

थोड़ा दना पाछै बो मिनख बी कुड़ता नै लेबा चलग्यो। बदरी बी कुड़ता मै सूँ कपड़ो बचार बिका छोरा कै बुरसेट बणार पैरा दियो हो। बीरबळ बी बुरसेट नै देख लियो अर बिच्यार लगायो कै, यो तो आपणा कुड़ता मै सूँ बचायेड़ो कपड़ो है। बीरबळ मन मै बिच्यार लगार गोकल दरजी कनै चलग्यो अर बिनै कह्यो, थ्हे तो म्हारा कुड़ता का कपड़ा नै कम बतार्यो हो। बदरी तो बी कपड़ा मै सूँ बचार बिका छोरा की बी बुरसेट बणा दियो। या बात सुणर गोकल दरजी कह्यो, बिको छोरो केक साल को हो? बीरबळ कह्यो, दो साल को है। गोकल कह्यो, "अब आगी म्हारै समज मै जिसूँ ई बो बणा दियो म्हारो छोरो तो सात साल को है।" पाछै बो मिनख जाणग्यो कै ये दरजी तो खुद को ऊल्लू सिदो करै है।

सीख:- खुद का लालच क्ले दूसरा को नुकसान कोनी करणो चायै।

कहावत

1.खेरात बंटै बठे मंगता आपै ई पूंच ज्या।

अर्थ:- जहाँ भीख बंटती है वहाँ भिखारी अपने आप ही पहुँच जाते हैं।

2.खांड गळी का सै सिरी, रोग गळी का कोई कोनी।

अर्थ:- खाने-पीने के अवसर पर तो सब आ जाते हैं, लेकिन विपदा के समय कोई नहीं आता है।

3.गई आबरू पाछी कोनी बावड़ै।

अर्थ:- आदमी की एक बार इज्जत चली जाने पर वापिस नहीं आती है।

पहेली

1. कान जखै का बडा, देई है छोटी, नरम-नरम सा बाळ, चोकैनो अत्तरो कि कोई पकड़ कोनी सकै, बडी तेज है बिकी चाल – खरगोस

2. एडी चालूं टेडी चालूं चालूं कमरकस ई पाह्ळी को पह्ळ देदे तन रिपिया देद्यू दस – भारी

बनड़ी यो गीत

मै तनै बुजूं ए बनड़ी थ्हारै ए बैठण की चोकी कैण घड़ी जी

म्हारै ए सरां म्हारी सईयो बसै खाती को बेटो बणै घड़ी जी

मै तनै बुजूं ए बनड़ी थ्हारै न्हावण को ए कुंडो कैण घड़्यो जी

म्हारै ए सरां म्हारी सईयो बसै ए कुम्हारी को बेटो बणै घड़्यो जी

मै तनै बुजूं ए बनड़ी थ्हारै ए पैरण का कपड़ा कैण सिंया जी

म्हारै ए सरां म्हारी सईयो बसै ए दरजी को बेटो बणै सिंया जी

मै तनै बुजूं ए बनड़ी थ्हारै ए हातां री मनी कैण मांडी जी

म्हारै ए सरां म्हारी सईयो बसै ए सुयेली भाभी बणै मांडी जी

मै तनै बुजूं ए बनड़ी थ्हारै ए बानण का सेवरा कैण गुंथ्या जी

म्हारै ए सरां म्हारी सईयो बसै माळी को बेटो बणै गुंथ्या जी।

निरमाण सोसायटी-सीकर
www.shekhawati.org.in
Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web- www.nirmaan.org.in

बणाबाळा-रतन लाल योगी
मो.+919587593455